

PUNYASHLOK AHILYADEVI HOLKAR SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR

B.A. Part- III

Subject: ECONOMICS

Certificate Course in Financial Markets

(With effect from June, 2021)

Total Lectures: 60

Total credits: 04

Marks: 50

Preamble

This industry oriented course is specially designed for those who want to make their career in financial institutions, broking houses, research houses and depository houses. This course will assist the students who wish to work as a arbitrager, executive or manager, investor or trader. This course provides a strong base of knowledge about financial market and its operations.

Syllabus

1. Basics of Financial Markets

(15 Lectures)

- 1.1 Meaning and structure of financial markets
- 1.2 Constituents of money market, Functions of money market, Role of money market
- 1.3 Role of capital market, Indian capital market, Features of capital market
- 1.4 Reforms in money market and capital market in India

2. Types of markets

(15 Lectures)

- 3.1 Equity market
- 3.2 Commodity market
- 3.3 Currency market
- 3.4 Derivatives market

3. Stock market.

(15 Lectures)

- 2.1 Meaning of stock market, Primary and secondary market
- 2.2 Functions of stock market
- 2.3 Longer term fixed-income capital markets, types of shares, Bonds
- 2.4 Link between savers and investment opportunities

4. Stock exchanges

(15 Lectures)

- 4.1 Basics of Mutual Fund, NAV, SIP, ELSS
- 4.2 National Stock Exchange
- 4.3 Bombay Stock Exchange
- 4.4 Role of SEBI

References

1. Jitendra Gala- Guide to Indian stock market
2. Deepak Shinde- Indian stock market
3. Ankit Gala & Khushboo Gala- Fundamental analysis of shares
4. Vinod Kumar, Atul Gupta, Manmeet Kaur- Financial Markets, institutions and financial services
5. Nathan Bell- Stock market investing for beginners
6. Raghu Palat- Fundamental analysis for investors
7. Ajay Shah, Susan Thomas, Michael Gorham- Indian Financial Markets
8. M. Y. Khan- Indian financial system
9. M. Y. Khan- Financial management
10. Dart & Sundharam- Indian economy
11. Mishra & Puri- Indian economy

Examination:

Total Marks: 50

Theory Exam: 40 Marks + Project work: 10 Marks

**PUNYASHLOK AHILYADEVI HOLKAR SOLAPUR
UNIVERSITY, SOLAPUR**



Name of the Faculty - Humanities

CBCS Syllabus

Name of the Course B. A. III Hindi Sem. V

Paper No. VII

विशेष लेखक : भगवानदास मोरवाल

With effect from June - 2021-2022

पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर सोलापुर विश्वविद्यालय,सोलापुर

तृतीय वर्ष कला, बी.ए. भाग तीन

हिंदी विशेष लेखक प्रश्नपत्र क्रमांक 7

अध्यापन वर्ष : 2021-22, 2022-23, 2023-24

परीक्षाएँ : 2021, 2022, 2023, 2024

पाँचवा सत्र

प्रस्तावना :

हिंदी के बहुमुखी रचनाकार के रूप में भगवानदास मोरवाल का नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने उपन्यास, कहानी, संस्मरण आदि विभिन्न विधाओं में अपनी कलम चलाई है। अपने लेखन के माध्यम से कई उपेक्षित संदर्भों को अपने लेखन का विषय बनाया है। लोकजीवन और वहाँ का परिवेश उनके लेखन से सजीव हो उठा है। दलित, वंचित वर्ग को साहित्य के माध्यम से उजागर करने का कार्य उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से किया है। लोक संस्कृति, स्त्री जीवन, शिक्षा व्यवस्था, सांप्रदायिकता, सामाजिक व्यवस्था जैसे कई पहलू उनके चिन्तन का विषय रहे हैं। भगवानदास मोरवाल कृत 'प्रतिनिधि कहानियाँ' समाज के भीतर समानता और अस्मिता के लिए चल रहे मंथन एवं संघर्ष की कहानियाँ है। इसमें समाज जीवन के विविध आयामों का जो रेखांकन हुआ है।

उद्देश्य :

1. भगवानदास मोरवाल के व्यक्तित्व को परिचित कराना।
2. भगवानदास मोरवाल के लेखन से अवगत कराना।
3. प्रतिनिधि कहानियों के विषय विविधता से परिचित कराना।
4. कहानियों के कलापक्ष एवं भावपक्ष से रू-ब-रू कराना।

पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर सोलापुर विश्वविद्यालय,सोलापुर

तृतीय वर्ष कला, बी.ए. भाग तीन

हिंदी विशेष लेखक प्रश्नपत्र क्रमांक 12

अध्यापन वर्ष : 2021-22, 2022-23, 2023-24

परीक्षाएँ : 2021, 2022, 2023, 2024

छठा सत्र

प्रस्तावना :

हिंदी के बहुमुखी रचनाकारों के रूप में भगवानदास मोरवाल का नाम लिया जाता है। जिन्होंने उपन्यास, कहानी, संस्मरण, जैसे विभिन्न विधाओं पर अपनी कलम चलाई। अपने लेखन के माध्यम से कई सारे अनछूए विषय को अपने लेखनी का विषय बनाया। ग्रामीण जीवन और वहाँ का परिवेश उनके लेखन से सजीव हो उठता है। दलित, वंचित वर्ग को साहित्य के माध्यम से समाज के सामने लाने का कार्य उन्होंने अपने लेखनी के माध्यम से किया है। स्त्री जीवन, शिक्षा व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था जैसे कई पहलू उनके चिन्तन के विषय रहे हैं। उन्होंने हिंदी उपन्यास विधा में कई नये संदर्भों को रेखांकित कर अपनी पहचान बनाई है। भगवानदास मोरवाल कृत 'शंकुतिका' उपन्यास पुरुष प्रधान समाज में स्त्री महत्ता को दर्शाते हुए उनके जीवन के विभिन्न पक्षों को अभिव्यक्ति देता है।

उद्देश्य :

1. भगवानदास मोरवाल के उपन्यास संसार का परिचय कराना।
2. 'शंकुतिका' उपन्यास का तात्विक अध्ययन कराना।
3. शंकुतिका उपन्यास की विशेषताओं को समझाना।

पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर सोलापुर विश्वविद्यालय,सोलापुर

तृतीय वर्ष कला, बी.ए. भाग तीन

हिंदी विशेष प्रश्नपत्र क्रमांक 8

अध्यापन वर्ष : 2021-22, 2022-23, 2023-24

परीक्षाएँ : 2021, 2022, 2023, 2024

पाँचवा सत्र

प्रस्तावना :

किसी रचना के गठन, भाव तथा मूल्य उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र का ज्ञान होना आवश्यक होता है। काव्यशास्त्र के अध्ययन से पाठकों की दृष्टि एवं सोच में परिवर्तन आता है। साहित्य के माध्यम से समाज की ओर देखने का दृष्टिकोण बदलता है। साहित्य के कलापक्ष को समझने के लिए और मूल्यों को बनाए रखने में काव्यशास्त्र का अध्ययन विशेष महत्त्व रखता है।

उद्देश्य :

1. साहित्य निर्मिति की प्रक्रिया का बोध कराना।
2. साहित्य/काव्य के भेदों से अवगत कराना।
3. साहित्य की नवीन विधाओं का परिचय कराना।
4. गद्य तथा पद्य के तत्वों को समझना।
5. शब्दों की शक्ति को समझना।

पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर सोलापुर विश्वविद्यालय,सोलापुर

तृतीय वर्ष कला, बी.ए. भाग तीन

हिंदी विशेष प्रश्नपत्र क्रमांक 13

अध्यापन वर्ष : 2021-22, 2022-23, 2023-24

परीक्षाएँ : 2021, 2022, 2023, 2024

छठा सत्र

प्रस्तावना :

किसी भी रचना के पढ़ने के पश्चात रसास्वाद की आवश्यकता अधिक होती है। रचना रसास्वाद से युक्त हो तो पाठकों में उत्साह निर्माण होता है। इसी दृष्टि से साहित्य के उपादानों का प्रयोग तथा साहित्य में उतरे गुणों को परखना महत्वपूर्ण होता है जिससे साहित्य के मर्म तथा मूल्यों को परखा जाता है। अतः इन्हें परखने के लिए समालोचना की आवश्यकता होती है। समालोचना लेखक और पाठक दोनों के लिए आवश्यक होती है।

उद्देश्य :

1. छात्रों को साहित्य के उपकरणों को समझना।
2. रसानुभूति की प्रक्रिया को समझना।
3. साहित्य के मूल्य, गुणों को पहचानना।
4. आलोचना के माध्यम से विभिन्न आलोचना पध्दतियाँ तथा विभिन्न विमर्शों को समझना।

पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर सोलापुर विश्वविद्यालय,सोलापुर

तृतीय वर्ष कला, बी.ए. भाग तीन

हिंदी विशेष प्रश्नपत्र क्रमांक 9

अध्यापन वर्ष : 2021-22, 2022-23, 2023-24

परीक्षाएँ : 2021, 2022, 2023, 2024

पाँचवा सत्र

प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य के आदिकालीन और मध्यकालीन इतिहास से छात्रों को अवगत कराने के हेतु से इस प्रश्नपत्र का निर्धारण किया गया है। साथ ही इस साहित्येतिहास में किन दार्शनिक विचारधाराओं का असर साहित्यकारों पर किस रूप में पड़ा इसका विवेचन भी इतिहास के अध्येताओं के लिए आवश्यक है। हिंदी साहित्य के इतिहास की कालजयी रचनाएँ एवं रचनाकारों के सामान्य परिचय के बिना समग्र इतिहास का अध्ययन नहीं हो सकेगा। इन सभी बातों को केंद्र में रखकर ही हिंदी साहित्य के इतिहास का कालानुरूप विकास छात्रों के अध्ययन हेतु रखा गया है।

उद्देश्य :

1. हिंदी साहित्य की दार्शनिक पूर्वपीठिका से परिचित कराना।
2. हिंदी साहित्य के इतिहास का परिचयात्मक अध्ययन।
3. हिंदी साहित्य की आदिकालीन और मध्यकालीन कालजयी रचनाएँ तथा रचनाकारों का सामान्य परिचय।
4. हिंदी साहित्य के इतिहास के कालानुरूप विकास का अध्ययन।

पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर सोलापुर विश्वविद्यालय,सोलापुर

तृतीय वर्ष कला, बी.ए. भाग तीन

हिंदी विशेष प्रश्नपत्र क्रमांक 14

अध्यापन वर्ष : 2021-22, 2022-23, 2023-24

परीक्षाएँ : 2021, 2022, 2023, 2024

छठा सत्र

प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के इतिहास से छात्रों को अवगत कराने के हेतु से इस प्रश्नपत्र का निर्धारण किया गया है। साथ ही आधुनिक हिंदी साहित्य पर जिन दार्शनिक विचारधाराओं का असर हुआ है उनका विवेचन भी पाठ्यक्रम में किया जाएगा। हिंदी के आधुनिक रचनाकार, उनकी कृतियाँ, विभिन्न वाद एवं विभिन्न विमर्श के अध्ययन के साथ विविध विधाओं के विकास का अध्ययन इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य है।

उद्देश्य :

1. आधुनिक हिंदी साहित्य की दार्शनिक पूर्वपीठिका से परिचित कराना।
2. आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास का परिचयात्मक अध्ययन कराना।
3. आधुनिक हिंदी साहित्य के रचनाकारों का सामान्य परिचय कराना।
4. आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास के कालानुरूप विभिन्न वाद एवं विधाओं के विकास का अध्ययन कराना।

पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर
तृतीय वर्ष कला, बी.ए. भाग तीन
हिंदी विशेष प्रश्नपत्र क्रमांक 10
अध्यापन वर्ष : 2021–22, 2022–23, 2023–24
परीक्षाएँ : 2021, 2022, 2023, 2024
पाँचवा सत्र

प्रस्तावना :

प्रयोजनमूलक हिंदी यह हिंदी का एक महत्वपूर्ण रूप है। राजभाषा हिंदी के रूप में हिंदी प्रशासन और कार्यालय की भाषा के रूप में विकसित हुई। सूचना प्रौद्योगिकी के युग में तो इसका महत्व और प्रासंगिकता अधिक बढ़ गई है। कार्यालयीन हिंदी के साथ हिंदी भाषा जनसंचार माध्यमों में निरंतर नये आयामों को उद्घाटित कर रही है। परंपरागत संदर्भ स्रोतों के सिवा अब भाषा और लिपि के नये संसाधन भी विकसित हो रहे हैं। विश्वभाषा के तौर पर हिंदी ने एक नया रूप प्राप्त किया है। हिंदी भाषा के इस प्रयोजनमूलक रूप का और उसके विविध आयामों का अध्ययन न केवल महत्वपूर्ण है अपितु प्रासंगिक भी है।

उद्देश्य :

1. प्रयोजनमूलक हिंदी के स्वरूप एवं विकास से छात्रों को परिचित कराना।
2. आधुनिक जनसंचार माध्यमों में हिंदी के बढ़ते प्रयोग एवं संभावनाओं से छात्रों को परिचित कराना।
3. हिंदी के प्रयोग के प्रति रुचि जगाकर पत्राचार संबंधी क्षमता विकसित करना।
4. कार्यालयीन पत्राचार से छात्रों को अवगत कराना।
5. प्रयोजनमूलक हिंदी के माध्यम से रोजगारपरक कौशल विकसित करना।

पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर

तृतीय वर्ष कला, बी.ए. भाग तीन

हिंदी विशेष प्रश्नपत्र क्रमांक 15

अध्यापन वर्ष : 2021-22, 2022-23, 2023-24

परीक्षाएँ : 2021, 2022, 2023, 2024

छठा सत्र

प्रस्तावना :

व्यावहारिक हिंदी के रूप में हिंदी भाषा का बहुमुखी विकास हो रहा है। हिंदी का बैंक, दूरदर्शन, सरकारी कार्यालय, रेल, मीडिया, फिल्म, इंटरनेट, विज्ञापन आदि में बड़े पैमाने पर प्रयोग हो रहा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भी हिंदी की महत्ता को स्वीकार कर उसके जरिए अपना व्यवहार शुरू किया है। सभी स्थानों पर अब हिंदी का प्रयोग किया जा रहा है। हिंदी ने अनुवाद के माध्यम एक ओर भारतवर्ष को जोड़ने में सेतु का कार्य किया है तो दूसरी ओर वैश्विक संदर्भ, ज्ञान, विज्ञान और तकनीकी को अपनाकर स्वयं को उसके अनुकूल बनाया है। हिंदी के इस रूप ने रोजगार में कई अवसर मुहैया कर दिए हैं। अतः हिंदी के इस रूप को जानना अनिवार्य है।

उद्देश्य :

1. अनुवाद का स्वरूप और महत्त्व से अवगत कराना।
2. विज्ञापन की दुनिया और व्यवहार से परिचित कराना
3. अनुवाद और विज्ञापन लेखन की क्षमता विकसित करना।
4. वाणिज्यिक पत्राचार से छात्रों को अवगत कराना।
5. दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रयोग से अवगत कराना।
6. व्यावहारिक हिंदी के माध्यम से रोजगारपरक कौशल को विकसित करना।

**PUNYASHLOK AHILYADEVJI HOLKAR SOLAPUR
UNIVERSITY, SOLAPUR**



Name of the Faculty- **COMMERCE**

Syllabus-**CBCS Pattern**

Name of the Course-**B.COM-III-Semester V & VI**

Advanced Cost Accounting Paper - I

With effect from **June-2021**

PUNYASHLOK AHILYADEVJI HOLKAR SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR
B.Com.-III (Semester V & VI) Syllabus
Advanced Cost Accounting Paper - I
(w. e. f. June 2021)

Objectives of the course:

Following are the course objectives of Advanced Cost Accounting Paper - I

1. To create awareness of basic knowledge of Cost Accounting.
2. To provide knowledge of various elements of cost.
3. To prepare the students for computing total cost of production and cost per unit through the cost sheet.
4. To create skill of cost accounting practices mainly material control, recording of labour cost, its analysis and allocation of overhead costs.

Course Outcomes:

On completion of the course:

- CO1: Students will be familiar with the conceptual knowledge of cost accounting.
- CO2: Students will be understanding various elements of cost.
- CO3: Students will be acquired the knowledge of preparing statement of cost.
- CO4: Students will be able to know cost account practices.
- CO5: Students can acquire skill of cost accounting records.

PUNYASHLOK AHILYADEVJI HOLKAR
SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR



CBCS Pattern Syllabus for B.A.III History

Name of the Faculty - Humanities

Syllabus - History

Name of the course - B.A.III

With effect from - June,2021

PUNYASHLOK AHILYADEVI HOLKAR

SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR

B.A. Part III ,Subject - History

CBCS Pattern Syllabus (w. e. f. June 2021)

Preamble:

History, as well all know, is vital source to obtain knowledge about a nation's soul. Of late, this has been argued and established that there can't be a nation without a past. History will help students in making an informed decision regarding the goals that they wish to pursue in further higher education and more generally in life. The graduate attributes encompass values related to well-being, emotional stability, critical thinking, social justice and also skills for employability. In short, this syllabus prepares students for sustainability and life-long learning.

The syllabus has been framed with view to understand recent trends in history and interdisciplinary knowledge along with the Choice Based Credit System.

Duration:

The duration for the syllabus in one year with CBCS pattern (Sem. V and VI)

Eligibility:

The eligibility criteria for course as per Govt./PAHSUS rules and norms.

Objectives of the course:

1. To survey the sources of history of Ancient, Medieval and Modern India.
2. To introduce various historical concepts.
3. To Introduce the major events in development of Indian society and culture
4. To get insight into the history and cultural practices of Indian religions, such as Shaivism, Vaishnavism, Buddhism and Jainism.
5. To study Indian art and architecture.
6. To know the impact of various rule on Indian polity and society.
7. The course intends to provide and understanding of the social, economic, religious bases of India.
8. To enable the students to understand the process that led to the expansion of the Maratha power.
9. To understand changed nature of Maratha polity during the Peshwa period.
10. To examine the dynamics of Maratha Confederacy.
11. To examine role of Marathas in National politics of Eighteenth Century India.
12. Analyze the forces that led to the downfall of the Maratha power.
13. To understand basic components of the Ancient, Medieval administrative system.
14. To help the students to know Modern World.
15. To acquaint the student with the political and socio-economic development in other countries a understand the contemporary world in light of its background history.
16. To state the importance of brotherhood, peace, Co-operation and national security.
17. To examine peace keeping process in the Modern World.
18. To introduce meaning, nature, scope and importance of History.
19. To introduce historical places Maharashtra and India.

Outcomes of the course:

1. Students will be able to examine institutional basis of India.
2. Identify the rulers and their administration.
3. Evaluate the legacy of Shaivism, Vaishnavism, Buddhism and Jainism.
4. Analyze the features of Indian art and architecture.
5. Students will be able to explain our heritage through cultural aspects of India.
6. Analyze the impact of various rule on Indian polity and society.
7. Assess the economy and religion of various rule.
8. Students will be able to examine social, economic and religious condition in Ancient and Medieval period
9. Analyze the features of Indian art and architecture.
10. Students will be able to analyze the Marathas policy of expansionism
11. Understand the role played by the Marathas in the 18th century polity.
12. Identify the causes of the downfall of Maratha empire.
13. Students will be able to analyze the civil administration, military administration and judicial system during the Peshwa period.
14. Students will understand the relations between the nations in the world.
15. Students will study the political, social and economic challenges in the Modern World.
16. Analyze the streamline the role of League of Nations and UNO.
17. Students understand the consequences of the World War I, World War II and Cold War regarding the present global crises.
18. Students will be able to explain the what is History and importance of History.
19. Identify the different types of primary and secondary sources. Students will be able to examine sources of History
20. Students will understand the Museum and Historical tourism.

**PUNYASHLOK AHILYADEVJI HOLKAR
SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR**



Faculty of Humanities

New Syllabus (CBCS)

B.A.Part III – Marathi (Sem. V & VI)

with effect from June 2021

सत्र पाचवे

अभ्यासपत्रिका क्र. ७ DSE -VII : ५. १. साहित्यशास्त्र (पूर्वार्ध)

गुण ४०

उद्दिष्टे :

१. साहित्य लक्षणासंबंधीच्या विविध सिद्धांतांचा परिचय करून घेणे.
२. साहित्याचे स्वरूप समजावून घेणे.
३. साहित्याच्या विविध प्रयोजनांचा परिचय करून घेणे.
४. साहित्यनिर्मितीच्या जनक कारणांची माहिती करून घेणे.
५. शब्दशक्तीचा परिचय करून घेणे.

अभ्यासक्रम :

अ.क्र.	घटक	तासिका	श्रेयांक	गुण
१.	साहित्याची लक्षणे अ) भारतीय काव्यशास्त्राचा स्थूल परिचय :शब्द, रस, रीती, ध्वनी, वक्रोक्ती, औचित्य व अलंकार या सिद्धांतांच्या अनुरोधाने ब) पाश्चात्य साहित्य लक्षणांचा स्थूल परिचय : कल्पना, भावना, प्रज्ञा,शैली व लयबद्धता या लक्षणांच्या अनुरोधाने	१५	१	१०
२.	साहित्याची प्रयोजने अ) प्राचीन - यश, अर्थ, व्यवहारविज्ञान, अशुभनिवारण, उपदेश व आनंद ब) आधुनिक - पलायनवाद, स्वप्नरंजन, जिज्ञासापूर्ती, आत्माविष्कार व उद्बोधन,	१५	१	१०
३.	साहित्यनिर्मितीची जनक कारणे अ) साहित्यनिर्मितीचे स्वरूप ब) प्रतिभा, बहुश्रुतता आणि अभ्यास व स्फूर्ती क) कल्पनाशक्ती, मानसिक स्वास्थ्य, देशकाल परस्थिती इ. कारणांचा परिचय	१५	१	१०

अभ्यासपत्रिका क्र. ८ DSE- VIII : ५. २. भाषाविज्ञान व व्याकरण (पूर्वार्ध)

गुण ४०

उद्दिष्ट्ये :

१. मानवी जीवनातील भाषेचे स्वरूप व महत्त्व विद्यार्थ्यांना समजावून सांगणे.
२. विद्यार्थ्यांमध्ये भाषाविषयक वैज्ञानिक दृष्टिकोन विकसित करणे.
३. भाषिक संप्रेषणाचा परिचय करून घेणे.
४. भाषा परिवर्तनाचे स्वरूप स्पष्ट करणे.
५. मराठी भाषेच्या व्याकरणारचे स्वरूप समजावून सांगणे.

अभ्यासक्रम :

अ.क्र.	घटक	तासिका	श्रेयांक	गुण
१.	भाषा : संकल्पना व स्वरूप अ) भाषा : शब्दार्थ व व्याख्या ब) भाषेचे घटक - ध्वनी, शब्द, वाक्य, अर्थ क) भाषिक व भाषेतर संप्रेषण ड) भाषेची वैशिष्ट्ये व कार्ये	१५	१	१०
२.	भाषाभ्यासाची परंपरा अ) प्राचीन भाषाभ्यास ब) ऐतिहासिक भाषाशास्त्राचे स्वरूप क) अंतर्वर्तुळ - बहिर्वर्तुळ सिद्धांत ड) मराठी भाषेची पूर्वपीठिका	१५	१	१०
३.	भाषिक परिवर्तन अ) भाषिक परिवर्तनाचे स्वरूप ब) ध्वनिपरिवर्तन : कारणे व प्रकार क) अर्थपरिवर्तन : कारणे व प्रकार	१५	१	१०
४.	मराठीचे व्याकरण अ) व्याकरणाचे स्वरूप ब) मराठीची वर्णमाला (स्वर, स्वरादी, व्यंजने) क) शब्दांचे प्रकार (विकारी व अविकारी)	१५	१	१०
	एकूण	६०	०४	४०

**अभ्यासपत्रिका क्र. १ DSE- IX : ५. ३. मध्ययुगीन मराठी वाङ्मयाचा इतिहास
इ.स. ११०१ ते १८००(पूर्वार्ध)**

गुण ४०

उद्दिष्ट्ये :

१. मध्ययुगीन मराठी वाङ्मयातीची परंपरा व इतिहास यांचा परिचय करून घेणे.
२. मध्ययुगीन मराठी वाङ्मयातील निर्मितीच्या प्रेरणांचा परिचय करून घेणे.
३. मध्ययुगीन मराठी वाङ्मयाचे स्वरूप व वैशिष्ट्ये यांचा परिचय करून घेणे.
४. मध्ययुगीन मराठी वाङ्मयाच्या सांस्कृतिक पार्श्वभूमीची उकल करणे.
५. मध्ययुगीन कालखंडातील प्रमुख संप्रदाय व ग्रंथनिर्मिती यांचा अनुबंध स्पष्ट करणे.

अभ्यासक्रम :

अ.क्र.	घटक	तासिका	श्रेयांक	गुण
१.	मराठी भाषा उत्पत्तीकाळ व आद्य ग्रंथ अ) मराठी भाषेचा उत्पत्तीविचार ब) मराठी भाषेचा उत्पत्तीकाळ क) मराठीतील आद्य ग्रंथ स्वरूप व विशेष ड) मराठी भाषेतील ग्रंथ परंपरा	१५	१	१०
२.	महानुभवीय वाङ्मयः प्रेरणा, स्वरूप व वैशिष्ट्ये अ) महानुभाव संप्रदाय विचार कार्य ब) महानुभवीय वाङ्मयाच्या प्रेरणा क) महानुभवीय वाङ्मयाचे स्वरूप ड) महानुभवीय वाङ्मयाची वैशिष्ट्ये	१५	१	१०
३.	वारकरी संप्रदाय : प्रेरणा, स्वरूप व वैशिष्ट्ये अ) वारकरी संप्रदाय स्वरूप ब) वारकरी संप्रदायाचे विचार कार्य क) संत ज्ञानेश्वर ड) संतमेळा - संत गोरा कुंभार, संत सावता माळी, संत नरहरी सोनार, संत चोखामेळा, संत कर्ममेळा, संत सेना महाराज, संत मुक्ताबाई, संत जनाबाई	१५	१	१०

अभ्यासपत्रिका क्र. १० DSE- X : ५.४. उपयोजित मराठी (पूर्वार्ध)

गुण ४०

उद्दिष्ट्ये :

१. विद्यार्थ्यांना पारिभाषिक शब्दांचा परिचय करून देवून पारिभाषिक शब्दांची नवनिर्मिती करण्यास प्रेरित करणे.
२. संगणक युगात ई मराठी लेखनाचे महत्त्व सांगून ते करण्यास प्रवृत्त करणे.
३. मुद्रितशोधनाचे महत्त्व सांगून त्याचा सराव करून घेणे.
४. स्पर्धा परीक्षेतील मराठी भाषेचे महत्त्व विद्यार्थ्यांच्या लक्षात आणून देणे.
५. स्पर्धा परीक्षेत यश संपादन करण्यासाठी विद्यार्थ्यांमध्ये भाषिक कौशल्याचा विकास करणे.

अभ्यासक्रम :

अ.क्र.	घटक	तासिका	श्रेयांक	गुण
१.	कार्यालयीन पारिभाषिक शब्द अ) पारिभाषिक शब्दांचे स्वरूप ब) कार्यालयीन पारिभाषिक शब्द क) न्यायालयीन पारिभाषिक शब्द ड) महसूल, विमा विभागातील पारिभाषिक शब्द इ) पद नामावली पारिभाषिक शब्द ई) साहित्य समीक्षा पारिभाषिक शब्द उ) उपयोजन - पारिभाषिक शब्द निर्माण करून घेऊन त्याचा संग्रह तयार करणे.	१५	१	१०
२.	ई मराठी लेखन अ) ई पत्र लेखन ब) ब्लॉग लेखन क) विकिपीडिया लेखन ड) मराठी कलफलक लेखन इ) उपयोजन - प्रकल्प, कार्यशाळा घेऊन लेखन सराव घेणे.	१५	१	१०
३.	मुद्रितशोधन अ) मुद्रितशोधन म्हणजे काय ?	१५	१	१०

**अभ्यासपत्रिका क्र. ११ DSE- XI : ५. ५. आधुनिक मराठी साहित्यातील विविध प्रवाह
(ग्रामीण व दलित)**

गुण ४०

उद्दिष्ट्ये :

१. आधुनिक मराठी साहित्यातील प्रवाहांच्या निर्मितीची पार्श्वभूमी समजावून घेणे.
२. ग्रामीण व दलित साहित्य प्रवाहाची संकल्पना, प्रेरणा, स्वरूप व वैशिष्ट्ये विशद करणे.
३. ग्रामीण व दलित साहित्य प्रवाहांचा उद्गम व विकास स्पष्ट करणे.
४. ग्रामीण कादंबरीचे स्वरूप सांगून नेमलेल्या साहित्यकृतीतील आशयसूत्रे, ग्रामीण जीवन चित्रण, भाषा यांचे वेगळेपण विशद करणे.
५. दलित आत्मकथनांचे स्वरूप समजावून घेऊन नेमलेल्या साहित्यकृतीतील आशय, सामाजिकता, वैचारिकता, भाषा विशद करणे.

अभ्यासक्रम :

अ.क्र.	घटक	तासिका	श्रेयांक	गुण
१.	ग्रामीण साहित्य अ) ग्रामीण साहित्य संकल्पना व स्वरूप ब) ग्रामीण साहित्याची प्रेरणा क) ग्रामीण साहित्याची वैशिष्ट्ये ड) ग्रामीण साहित्यातील समाजजीवन इ) ग्रामीण साहित्याची भाषा	१५	१	१०
२.	नेमलेली कलाकृती : चैत (कादंबरी) - द. तु. पाटील, मौज प्रकाशन, मुंबई, २०१८ अ) ग्रामीण कादंबरीचे स्वरूप व वाटचाल ब) द. तु. पाटील : व्यक्ती आणि वाङ्मय क) चैत कादंबरीचे स्वरूप व वैशिष्ट्ये ड) चैत कादंबरीतील आशयसूत्रे व व्यक्तिचित्रणे इ) चैत कादंबरीतील ग्रामीण जीवन व वातावरण निर्मिती ई) चैत कादंबरीतील भाषाशैली	१५	१	१०

सत्र सहावे

अभ्यासपत्रिका क्र. १२ DSE- XII : ६. १. साहित्यशास्त्र (उत्तरार्ध)

गुण ४०

उद्दिष्टे :

१. रसविचाराचे स्वरूप व प्रकार समजावून घेणे.
२. साहित्य प्रकारांच्या स्वरूपाची ओळख करून घेणे.
३. साहित्याचा भाषाविचार समजावून सांगणे.
४. साहित्यमूल्यांची जाणीव करून घेणे.
५. साहित्यविषयक विचार आणि जाणिव वृद्धिंगत करणे.

अभ्यासक्रम :

अ.क्र.	घटक	तासिका	श्रेयांक	गुण
१.	रसविचार अ) रस म्हणजे काय ? ब) रस संकल्पना व स्वरूप क) रससंख्या ड) भरतमुनींचे रससूत्र	१५	१	१०
२.	काव्यानंदमीमांसा अ) काव्यानंद कसा प्राप्त होतो? ब) काव्यानंद उपपत्ती क) तादात्म्य, पुनःप्रत्यय आणि जिज्ञासापूर्ती ड) सविकल्प समाधी, ताटस्य आणि समधातता	१५	१	१०
३.	साहित्यप्रकारांचा अभ्यास अ) कविता ब) कथा क) कादंबरी ड) नाटक	१५	१	१०
४.	साहित्यमूल्यां अ) भावनाशीलता ब) काल्पनिकता क) अनुभवनिष्ठता ड) विचारप्रधानता	१५	१	१०

अभ्यासपत्रिका क्र. १३ DSE- XIII : ६. २. भाषाविज्ञान व व्याकरण (उत्तरार्ध)

गुण ४०

उद्दिष्टे :

१. भाषाविज्ञान व मराठी भाषा यांच्यातील अनुबंध समाजवून घेणे.
२. वर्णनात्मक भाषाविज्ञानाचा परिचय करून घेणे.
३. मराठी भाषा व बोली यांच्यातील परस्परसंबंध स्पष्ट करणे.
४. मराठी भाषेवरील इतर भाषांचा प्रभाव समजावून घेणे.
५. मराठी भाषेची व्याकरणिक व्यवस्था समजावून घेणे.

अभ्यासक्रम :

अ.क्र.	घटक	तासिका	श्रेयांक	गुण
१.	वर्णनात्मक भाषाविज्ञान अ) वर्णनात्मक भाषाविज्ञानाचे स्वरूप ब) स्वनिमविचार : स्वन, स्वनिम, स्वनांतरे क) रूपिमविचार : रूप, रूपिम, रूपिकांतरे ड) वर्णनात्मक भाषाविज्ञानाचे वेगळेपण	१५	१	१०
२.	मराठी भाषा आणि बोली अ) भाषा आणि बोली संकल्पना ब) प्रमाणभाषा आणि बोली यांचे स्वरूप क) मराठीच्या बोलींचे स्वरूप ड) अहिराणी व वऱ्हाडी चा परिचय	१५	१	१०
३.	मराठी भाषेवरील इतर भाषांचा परिणाम अ) भाषिक परिणामांचे स्वरूप ब) मराठी आणि फारशी क) मराठी आणि हिंदी ड) मराठी आणि इंग्रजी	१५	१	१०
४.	मराठीचे व्याकरण अ) वाक्य आणि त्याचे प्रकार ब) प्रयोग आणि त्याचे प्रकार	१५	१	१०
	एकूण	६०	०४	४०

**अभ्यासपत्रिका क्र. १४ DSE- XIV : ६. ३. मध्ययुगीन मराठी वाङ्मयाचा
इतिहास इ.स. ११०१ ते १८००
(उत्तरार्ध)**

गुण ४०

उद्दिष्ट्ये :

१. मध्ययुगीन मराठी वाङ्मयातील परंपरा व इतिहास याचा परिचय करून घेणे.
२. मध्ययुगीन मराठी वाङ्मयातील निर्मितीच्या प्रेरणांचा परिचय करून घेणे.
३. मध्ययुगीन मराठी वाङ्मयाचे स्वरूप व वैशिष्ट्ये यांचा परिचय करून घेणे.
४. मध्ययुगीन मराठी वाङ्मयाच्या सांस्कृतिक पार्श्वभूमीची उकल करणे.
५. मध्ययुगीन कालखंडातील प्रमुख संप्रदाय व ग्रंथनिर्मिती यांचा अनुबंध स्पष्ट करणे.

अभ्यासक्रम :

अ.क्र.	घटक	तासिका	श्रेयांक	गुण
१.	पंडिती वाङ्मय अ) पंडिती वाङ्मय प्रेरणा, स्वरूप व वैशिष्ट्ये ब) मुक्तेश्वर क) रघुनाथ पंडित ड) वामन पंडित इ) सामराज ई) श्रीधर व मोरोपंत	१५	१	१०
२.	शाहिरी वाङ्मय अ) शाहिरी वाङ्मय प्रेरणा, स्वरूप व वैशिष्ट्ये ब) अनंत फंदी क) परशराम ड) प्रभाकर इ) सगनभाऊ ई) राम जोशी व होणाजी बाळा	१५	१	१०
३.	बखर वाङ्मय अ) बखर वाङ्मय प्रेरणा, स्वरूप व वैशिष्ट्ये ब) महिकावतीची बखर क) सभासद बखर ड) पानिपत बखर इ) आज्ञापत्र	१५	१	१०

उद्दिष्ट्ये :

१. मराठी भाषेचे विविध क्षेत्रातील महत्त्व व उपयोजन विद्यार्थ्यांना समजावून सांगणे.
२. जाहिरात कलेची उपयुक्तता स्पष्ट करून संहिता लेखनाचे कौशल्य शिकविणे.
३. प्रसारमाध्यमे आणि बदलत्या जीवनशैलीची गरज ओळखून विद्यार्थ्यांमध्ये निवेदन कौशल्ये विकसित करणे.
४. ग्रंथपरीक्षणाचे महत्त्व व स्वरूप सांगून, त्याचे कौशल्य विद्यार्थ्यांना अवगत करून घेणे.
५. विद्यार्थ्यांमध्ये साहित्य कलेची आवड निर्माण होण्यासाठी विविध साहित्य सहलींचे आयोजन करून प्रवासवर्णने, स्थल, निसर्ग इ. स्वानुभावपर लेखन करून घेणे.

अभ्यासक्रम :

अ.क्र.	घटक	तासिका	श्रेयांक	गुण
१.	जाहिरात लेखन अ) जाहिरात संकल्पना, स्वरूप व व्याप्ती ब) जाहिरातीचे महत्त्व व प्रकार क) जाहिरात लेखन व मराठी भाषिक कौशल्ये ड) जाहिरात संहिता लेखन (आकाशवाणी, वृत्तपत्र, दूरदर्शन) उ) उपयोजन - नमुना सराव	१५	१	१०
२.	निवेदन कौशल्ये अ) निवेदन स्वरूप व व्याप्ती ब) निवेदन कौशल्याचे महत्त्व व प्रकार क) आकाशवाणीसाठी निवेदन कौशल्ये ड) दूरचित्रवाणीसाठी निवेदन कौशल्ये इ) विविध कार्यक्रमांचे निवेदन कौशल्ये इ) उपयोजन - नमुनालेखन व प्रात्येक्षिके घेऊन सराव	१५	१	१०
३.	ग्रंथ परीक्षण अ) ग्रंथ परीक्षणाचे स्वरूप, महत्त्व आणि व्याप्ती ब) वाङ्मयीन कलाकृतीचे परीक्षण क) कथासंग्रहाचे परीक्षण ड) कवितासंग्रहाचे परीक्षण इ) नाटकाचे परीक्षण	१५	१	१०

अभ्यासपत्रिका क्र. १६ DSE- XVI : ६. ५. आधुनिक मराठी साहित्यातील विविध
प्रवाह (स्त्रीवादी व मुस्लीम)

गुण ४०

उद्दिष्ट्ये :

१. आधुनिक मराठी साहित्यातील प्रवाहांच्या निर्मितीची पार्श्वभूमी समजावून सांगणे.
२. स्त्रीवादी व मुस्लीम साहित्य प्रवाहांची संकल्पना, प्रेरणा व स्वरूप विशद करणे.
३. स्त्रीवादी व मुस्लीम साहित्य प्रवाहांचा उद्गम व विकास स्पष्ट करणे.
४. स्त्रीवादी कथांचे स्वरूप सांगून नेमलेल्या कलाकृतीतील आशयसूत्रे, समाजचित्रण, घटना प्रसंग, व्यक्तिरेखा व भाषा विशद करणे.
५. मुस्लीम कवितेचे स्वरूप सांगून नेमलेल्या कवितासंग्रहातील आशय, जीवन संघर्ष, सामाजिकता, वैचारिकता व भाषा स्पष्ट करून सांगणे.

अभ्यासक्रम :

अ.क्र.	घटक	तासिका	श्रेयांक	गुण
१.	स्त्रीवादी साहित्य अ) स्त्रीवादी साहित्य : संकल्पना व स्वरूप ब) स्त्रीवादी साहित्याची प्रेरणा व वैशिष्ट्ये क) स्त्रीवादी साहित्यातील समाजजीवन ड) स्त्रीवादी साहित्यातील भाषा	१५	१	१०
२.	नेमलेली कलाकृती : प्राजक्ताची फुलं आणि दाह (कथासंग्रह) - ललिता गादगे, निर्मल प्रकाशन, नांदेड, २०१४ अ) स्त्रीवादी कथांचे स्वरूप व वाटचाल ब) ललिता गादगे : व्यक्ती आणि वाङ्मय क) प्राजक्ताची फुलं आणि दाह मधील कथांचे स्वरूप ड) प्राजक्ताची फुलं आणि दाह मधील कथांची आशयसूत्रे इ) प्राजक्ताची फुलं आणि दाह मधील स्त्री जीवन ई) प्राजक्ताची फुलं आणि दाह मधील भाषाशैली	१५	१	१०

PUNYASHLOK AHILYADEVI HOLKAR SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR



Name of the Faculty: Humanities

Name of the Course: B. A. (English) Part – III

Name of the Course: Compulsory English

Semester- V & VI

With effect from June-2021-22, 2022-23 & 2023-24

Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University, Solapur

Name of the Course: **BA/BSC Part III**

Name of the Paper: **Compulsory English**

Semester: V & VI

Preamble:

Significance of English Language Skills in the days of technology is the need of the hour. Strengthening the basic language skills of English language acquired in the previous years of under graduation is essential. Oral and written communication skills along with the soft skills are required in this global scenario. The aspirants for jobs in private, public sectors, and PG Courses have to clear English proficiency test. This course will be instrumental in preparing the learners in these areas.

Objectives of the Course:

- Strengthening comprehension skills
- Developing appreciation abilities for Literature
- Strengthening oral & written communication skills
- Galvanizing soft skills

Course Outcome:

By the end of the course the students will be able to

- Use oral and written English effectively
- Appreciate literary language
- Use English language in creative writing
- Apply English language skills in clearing competitive examinations

Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University, Solapur

Name of the Course: **B.A. (English) Part–III**

Name of the Paper: **Introduction to Literary Criticism**

Semester – V & VI

Preamble:

It is a prime concern to inculcate the crucial skill of critical thinking among the students to lead them to a more balanced life. The ability to think critically and from multiple perspectives is very essential to make good evaluation and take the best decisions to lead a successful and satisfied life. The ability is quite needed for making the responsible good citizens. This paper aims at nourishing among the students the understanding of critical thinking: processes, terms, concepts, views, perspectives, approaches, theories, and practices. Keeping in view these basics, the paper includes the general understanding of the concept of criticism: meaning, nature, function, objectives, types, introductory history, and trends. So also, there is the inclusion of theories representing different eras as well as different perspectives.

Objectives:

- To introduce the students to the basics of literary criticism.
- To give the students an overview of the critical practices from traditional criticism
- To acquaint the students with types of Literary Criticism
- To develop in them a critical perspective and ability to relate and compare various critical approaches.

Course Outcomes:

By the end of the course the students will be able to:

- Understand the basics of literary criticism
- Trace the development of critical practices from traditional criticism
- Read and understand the representative theories/essays.
- Know the different critical terms/concepts/trends/movements/schools of Literary Criticism
- Look at a literary piece from different perspectives and relate them.

PunyashlokAhilyadeviHolkar Solapur University, Solapur

Name of the Course: **B.A. (English) Part–III**

Name of the Paper: **Introduction to Literary Criticism** (Paper-XII)

Semester - VI

Preamble:

This paper aims at creating the awareness of the critical creed, multiple perspectives, theoretical bases and actual practice of relating theories, approaches, and perspectives to a literary piece. Further, the paper is an attempt to integrate theory with practice making the students able to think critically. With the application of theoretical knowledge in like-like situations, the students are expected to lead more balanced life. The introduction of wide range material is with the end to bridge the gap between lab and land and develop the practical knowledge and skill of the students. The inclusion of approaches, representative theories and practical criticism would enhance the capabilities of the students. The practical criticism included in the syllabus is with the aim to make students more intensive and practice-oriented.

Objectives:

1. To introduce different approaches to the students.
2. To make the students aware of theoretical diversity.
3. To enable the students to understand different literary devices.

Course Outcomes:

By the end of the course the students will be able:

1. To identify the features of different critical approaches.
2. To understand an essay from romantic criticism.
3. To understand an essay from 20th century literary criticism
4. To understand literary devices.

**PUNYASHLOK AHILYADEVJI HOLKAR SOLAPUR
UNIVERSITY, SOLAPUR**

Name of the Course: **B.A. (English) Part-III**

Name of the Paper: **British Literature**

Semester V & VI

Preamble:

British literature is widely read and interpreted worldwide. It is necessary for the students to be introduced to different literary forms practiced by the writers in the British literary tradition.

Objectives:

1. To acquaint the students with the major genres of British Literature.
2. To introduce various movements and major contribution to British literature.
3. To enhance literary, linguistic and aesthetic competence of the students.

Course Outcomes:

By the end of the course the students will:

- Gain knowledge about stylistic strategies and diction of British literature.
- Be able to explore the creativity and the human experiences in fiction, poetry and drama.
- Be able to cultivate aesthetic and ethical values in life through literary texts.
- Gain knowledge of major trends and traditions of British literature.

Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University, Solapur

Name of the Course: **B.A. (English) Part- III**

Name of the Paper: **Indian English Literature**

Semester: V & VI

Preamble:-

In continuation with the study of early 20th century representative Indian English writers/writings covering major literary genres in B.A. Part-2, students are further to be acquainted with the development of Indian English Literature in late 20th century with focus on selected authors and texts .

Objectives of the course:-

- To introduce to the students the socio-cultural and intellectual background of the post-independence Indian English Literature.
- To acquaint undergraduates with different literary genres as practised by representative Indian English writers in early post-independence period.
- To help students to understand, interpret variety of themes and styles as reflected in the prescribed texts.

Course Outcomes:-

- By the end of the course, students will –
- Understand gradual development of Indian English Literature in the latter half of the 20th century.
 - Get acquainted with important themes & issues through study of texts prescribed.
 - Get acquainted with Indian ethos as revealed through prescribed texts.
 - Be able to interpret and analyse on their own & further nurture interest in the study of Indian literatures, especially Indian English Literature.

PUNYASHLOK AHILYADEVI HOLKAR SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR

Name of the Course: **B. A. –III (Semester V)**

Name of the Paper: **Literatures in English**

Semester: V & VI

Preamble:

Many outstanding literary figures from different part of the world have been contributing and enriching literature. As English is the World Language, it is essential to introduce World Literature to B.A. III year students so as to get acquainted with these literary exponents and take an opportunity to study cultures, society, language and tradition depicted by them in their works.

Objectives

- To develop a clear understanding of the key concepts of world literature
- To expose students to alternative literature produced in the world
- To provide an exposure to various writers from the entire world.
- To familiarize students with the different literary tradition of the world
- To help students understand and respond to literary texts of different time and period.

Course Outcome:

By the end the course, the students will:

- Understand Literature from the world around.
- Understand the salient features of postcolonial fiction and absurd theatre.
- Be able to respond critically to world literatures in English.
- Get acquainted with different cultures across the world through literature.

**PUNYASHLOK AHILYADEVJI HOLKAR SOLAPUR UNIVERSITY,
SOLAPUR**

Name of the Course: **B. A. (English) Part-III**

Name of the Paper: **Introduction to the Structure and Function of Modern
English (Paper-XI)**

Semester: V

Preamble:

The paper, as its name suggests, introduces the students to various structures of modern English and their functions. It familiarizes them with the inter-relations of the units in a structure. It aims to help them frame and analyse structures and use appropriate words and expressions to convey various meanings.

Objectives:

- To acquaint the students with the classification of words
- To acquaint them with the structures and functions of phrases, and enable them to analyse phrases
- To acquaint them with the elements of clause
- To acquaint them with the active and passive clause patterns
- To introduce them to a few communicative concepts

Course Outcomes:

By the end of the course, the students will be able to:

- Identify the class of words
- Know the structure and function(s) of phrases and analyse them
- Identify clause elements
- Construct sentences using basic clause patterns
- Use appropriate words and expressions to communicate the prescribed concepts

PUNYASHLOK AHILYADEVI HOLKAR SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR

Name of the Course: **B. A. –III**

Name of the Paper: **Introduction to the Structure and Function of Modern English
(Paper-XVI)
Semester: VI**

(Credits: 04) (Total lectures: 60)

Preamble:

The paper, as its name suggests, introduces the students to various structures of modern English and their functions. It familiarizes them with the inter-relations of the units in a structure. Moreover, it makes them realize how language varies according to the medium in which it is put, the relationship or the relative distance between the addresser and the addressee(s), and the function it fulfils in communication. It aims to help them use correct structures, and use appropriate words and expressions to convey various meanings.

Objectives:

- To acquaint the students with the classification of sentence
- To acquaint them with the processes of subordination and coordination
- To acquaint them with the structures and functions of subordinate clauses
- To introduce them to the basic and derived structures
- To introduce them to discourse analysis with reference to mode, tenor and domain
- To introduce them to a few more communicative concepts other than the ones prescribed in the preceding semester

Course Outcomes:

By the end of the course the students will be able to:

- Identify the simple and complex sentences
- Know the difference between subordination and coordination
- Derive structures from the basic ones
- Analyse a discourse with reference to its mode, tenor and domain
- Use appropriate words and expressions to communicate.

PUNYASHLOK AHILYADEVJI HOLKAR SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR



Name of the Faculty: Humanities

Syllabus: Economics (CBCS)

Name of the Course: B. A. Part-III

With effect from June, 2021

Objectives of Course:

1. To expose the students to the basic principles of Micro and Macro Economic Theory and also to introduce basics of Research Methodology.
2. The emphasis will be on thinking like an economist and the course will illustrate how microeconomic concepts can be applied to the market.
3. This course aims to introduce the students to the basic concepts of Economics. Macroeconomics deals with the aggregate economy. This course discusses the preliminary concepts associated with the determination and measurement of aggregate macroeconomic variables like savings, investment, GDP, money, inflation, and the balance of payments.
4. This course looks at the behaviour of the consumer and the producer and also covers the behaviour of a firm.
5. It introduces the students to various issues related to an Agricultural Economics.

**Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University,
Solapur**



'B' Grade (CGPA 2.62)

Name of the Faculty: Commerce & Management

CHOICE BASED CREDIT SYSTEM

Syllabus: Advanced Accountancy Paper-I

Name of the Course: B.Com. III (Sem.– V & VI)

(Syllabus to be implemented from w.e.f. June 2021)

Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University, Solapur

Syllabus

B. Com. III (CBCS Pattern)

Advanced Accountancy (Paper-I)

(with effect from June-2021)

Objective of the Course

1.To help the students to acquire the conceptual and practical knowledge of the Advanced Accountancy and to learn the techniques of preparing the financial statements.

2.The objective of this course is to expose students to advanced accounting issues and practices.

Semester- V

(Total Credit – 4)

Total Marks – 50 (University Assessment – 40 Marks, College Assessment – 10)

Unit No.	Title of the Unit	Contents of the Unit	No. of Lectures
1	Accounting for Banking Companies	<ul style="list-style-type: none">➤ Introduction➤ Important accounting provisions of Banking Regulation Act, 1949➤ Preparation of Profit and Loss Account and Balance Sheet as per the Third Schedule of Section 29 of Banking Companies Act.	20
2	Holding CompanyAccounts	<ul style="list-style-type: none">➤ Introduction:– Meaning – Features of Holding Company.➤ Subsidiary Company – pre-acquisition and post acquisition profit – Minority Interest – Cost of Capital (Goodwill/Capital Reserve) – Unrealized Profit – Mutual Indebtedness➤ Consolidation of Balance Sheet (AS – 21) (in vertical format only)	18
3	Insurance Claims	<ul style="list-style-type: none">➤ Introduction:– Meaning of indemnity period, average clause, unusual line goods, short sales, standard sales➤ Calculation of claim for loss of stock.	16

**Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University,
Solapur**



Name of the Faculty: Commerce & Management

CHOICE BASED CREDIT SYSTEM

Syllabus: Business Regulatory Framework

Name of the Course: B.Com. III (Sem.– V & VI)

(Syllabus to be implemented from w.e.f. June 2021)

Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University Solapur

Semester Pattern Syllabus

B.Com III

BUSINESS REGULATORY FRAMEWORK

(W.e.f. June 2021)

Preamble:

This course which is to be started with effect from June 2021 is designed to well acquaint the commerce students with the legal framework applicable to business. The knowledge relating to Mercantile Law applicable to business is indispensable to the students of commerce and to impart them this knowledge the syllabus of Business Regulatory Framework has been designed. The syllabus of this subject is divided into eight units namely, Introduction of Business Regulatory Framework which gives an idea relating concept of law, business law, legal environment of business and certain important legal concepts in Law such as L.L.P. (Limited Liability Partnership), and definitions of concepts of Industry, Industrial Dispute, Factory under New Industrial Relations Code, 2020 etc. The Indian Contract Act, 1872 and The Sale of Goods Act, 1930 regulate day to day business transaction where contract is entered into. These two important and basic Mercantile Laws are the part of syllabus vide unit two and three respectively. To study the law on Right to Information has become necessary now days and for that purpose fourth unit in syllabus is on Right to Information Act, 2005.

Today there are numberless instances of consumer exploitation and violation of consumer rights and in order to provide better protection to rights and interest of consumers law making authority has updated the consumer protection law by replacing old Consumer Protection Act of 1986 with new Consumer Protection Act enacted in 2019. So it become necessary to create awareness among the people who are consumers regarding new consumer protection laws and for that purpose fifth unit in syllabus is on Consumer Protection Act, 2019. Today corporate sector is expanding very fast. In order to give information and knowledge regarding the recent law relating to company to the students, sixth unit in syllabus is on The Companies Act, 2013 which has replaced old outdated topic on old outdated law Companies Act, 1956. SEBI (Securities and Exchange Board of India) is an important regulatory body which regulates securities market and corporate sector. For study of SEBI its work, powers and functions, seventh unit in syllabus is on SEBI Act, 1992. Eighth unit of syllabus is on Central Vigilance Commission of India to acquaint the students with Central Vigilance Commission of India, its powers, function and role in prevention of corruption in India.

Objectives of the course:

- 1) To provide basic knowledge of law to commerce students.
- 2) To create awareness about selected Business Laws.
- 3) To provide exposure of commerce students about Business Regulatory Framework in India and to revise the syllabus of subject.

**Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University,
Solapur**



'B' Grade (CGPA 2.62)

Name of the Faculty: Commerce & Management

CHOICE BASED CREDIT SYSTEM

Syllabus: Business Economics-III

Name of the Course: B.Com. III (Sem.– V & VI)

(Syllabus to be implemented from w.e.f. June 2021)

Title of the Course: B. Com III
Title of the Paper: Business Economics -III
Total Theory Lectures-(60per Semester)

Preamble:

The study of economic development has gained importance because of sustained interest of the developing countries in uplifting their economic conditions by restructuring their economies to acquire greater diversity, efficiency and equity in consonance with their priorities. So the students must learn about the measurement, factors of economic development and various theories of development. At the same time students must learn about Indian economic development with respect to Indian planning, the role of foreign capital and International financial institutes.

Keeping in mind the above things the topics of the paper arranged in this direction. First semester syllabus introduce the development part at macro level where the second semester syllabus concentrate on Indian development and planning.

Semester: V

Course Objectives:

The objectives of the course are...

- 1) To inform the students about the basics of economic growth and development.
- 2) To discuss the theories related to economic growth and development.
- 3) To explain the concepts and realtion of human resourses and economic development to the student.
- 4) To inform to the students about the problems related to economic growth.

Course Outcomes:-

Students will be able to...

- 1) understandthe basics of economic growth and development.
- 2) understand the theories related to economic growth and development.
- 3) explain the concepts and realtion of human resourses and economic development to the student.
- 4) understand the problems related to economic growth.

Theory Lectures

Unit No: 1- Economic Growth and Development (15)

- 1.1 Meaning and Concept of Economic Growth and Development
- 1.2 Difference between Economic Growth and Development
- 1.3 Measurement of Economic Development
- 1.4 Factors affecting Economic Development

Unit No: 2- Theories of Economic Growth and Development (15)

- 2.1 Adam Smith's Theory of Economic Development
- 2.2 David Ricardo's Theory of Economic Development
- 2.3 Malthusian Theory of Economic Development

2.4 W.W. Rostow's Theory of Economic Growth

Unit No:3-Human Resource and Economic Development (15)

- 3.1 Concept of Human Resource Development
- 3.2 Role of Human Resource in Economic Development
- 3.3 Human Development Index
- 3.4 Human Poverty Index, Multidimensional Poverty Index

Unit No: 4- Problems of Economic Growth (15)

- 4.1 Unemployment- Meaning, Types, Causes and Measures
- 4.2 Poverty- Meaning, Types, Causes and Measures
- 4.3 Economic Inequality- Meaning, Causes and Measures
- 4.4 Parallel Economy- Meaning, Causes and Measures

Semester: VI

Course Objectives:

The objectives of the course are...

- 5) To inform the students about the history, objectives and evaluation of Indian planning.
- 6) To discuss about the importance, size & composition and problems of foreign capital.
- 7) To discuss about the new economic policy of 1991 in detail.
- 8) To inform to the students about the role of international institutions in India's development.

Course Outcomes:-

Students will be able to...

- 5) understand the history, objectives and evaluation of Indian planning.
- 6) understand the importance, size & composition and problems of foreign capital.
- 7) explain India's new economic policy of 1991.
- 8) understand the role of international institutions in India's development.

Theory Lectures

Unit No: 1- Indian Planning and Development (15)

- 1.1 Meaning, Concepts and History of Indian Planning
- 1.2 Objectives of Indian Planning
- 1.3 Evaluation of Indian Planning
- 1.4 NitiAayog: Structure and Objectives

Unit No: 2- Foreign Capital (15)

- 2.1 Meaning and Types of Foreign Capital
- 2.2 Importance of Foreign Capital
- 2.3 Size and Composition of Foreign Capital in India
- 2.4 Problems of Foreign Capital

Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University, Solapur



NAAC Accredited-2015
'B' Grade (CGPA 2.62)

Name of the Faculty: Science & Technology

CHOICE BASED CREDIT SYSTEM

Syllabus: Chemistry

Name of the Course: B. Sc. Part- III (Sem. V & VI)

(Syllabus to be implemented from w.e.f. June 2021)

General Structure

Theory Examination:

- Structure of B.Sc. course under faculty of science has total 06 semesters for 3 years.
- B.Sc.-III comprises of total two semesters (Sem-V and Sem-VI).
Each semester will have Five theory papers (one compulsory English and four Chemistry papers) of 80 marks each (University external examination) and 20 marks for each paper (Internal examination)
The duration of each University theory paper examination will be of 2 hr. and 30 min.
Each theory paper has 20 marks for internal examination. There will be 10 marks unit test and 10 marks home assignment
- At the end of academic year i.e. semester - VI the practical examination will be conducted. The weightage of practical is of 280 marks for University external practical examination and 120 i.e (30*4) marks for internal practical examination.

There will be Four theory papers in chemistry of 80 marks for each semester. Their titles and marks distribution are as under (Excluding English).

B Sc –III Sem-V

DSE-1A-Physical Chemistry

DSE- 2 A-Inorganic Chemistry

DSE- 3 A-Organic Chemistry

DSE 4 A(I)- Analytical and Industrial Physical Chemistry **OR** DSE-4 A(II)- Methodology and materials of industrial importance

B Sc- III Sem-VI

DSE- 1B-Physical Chemistry

DSE- 2 B-Inorganic Chemistry

DSE- 3 B-Organic Chemistry

DSE 4B(I)- Analytical and Industrial Organic Chemistry **OR** DSE-4B(II) Applied Organic Chemistry

Practical Course

Practical Examination will be held at the end of the year.

A) Distribution of marks :

- **Continuous Internal Assessment for chemistry:**

- 1) Practical paper has 20*4=80 marks for internal examination.
- 2) Practical paper has 320 marks for external university practical examination.
There will be three practicals, one from each Physical, Inorganic and Organic practical work.
- 3) The mark distribution of 320 marks for external university practical examination is as follows.

Q. 1 Physical Chemistry experiment : 105 marks

Q. 2 Inorganic Chemistry experiment : 110 marks

Q. 3 Organic Chemistry experiment : 105 marks

Total marks: 320 marks

Duration of practical examination is three days, six and half hours per day

All answer sheets should be collected at the end of examination.

Practical Marks Distribution

- **Physical Chemistry experiment: 105 marks**

- a) Instrumental 40
- b) Non-instrumental 45
- c) Journal 10
- d) Oral : 10

- **Inorganic Chemistry experiment: 110 marks**

- a) Gravimetric analysis : 40
- b) Volumetric analysis 30
- c) Preparation 20
- d) Journal 10
- e) Oral 10

- **Organic Chemistry experiment: 105 marks**

- a) Organic Mixture Separation and analysis: 40

- b) Volumetric analysis : 35

OR

- b) Preparation 35
- c) Derivative 10
- d) Journal 10
- e) Oral 10

Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University, Solapur



NAAC Accredited-2015
'B' Grade (CGPA 2.62)

Name of the Faculty: Science & Technology

Choice Based Credit System (CBCS)

Syllabus: Physics

Name of the Course: B.Sc. III (Sem-V & VI)

(Syllabus to be implemented with effect from June 2021)

Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University, Solapur

Syllabus: For B.Sc. III Physics (CBCS Pattern)

Choice Based Credit System (CBCS) Pattern To be implemented from Academic Year 2021-22

1. Preamble:

Bachelor of Science (B.Sc.) in Physics is the course disseminating knowledge of the subject from fundamental concepts to state-of-technologies. Indeed, the curriculum encompasses knowledge of various themes such as Mathematical Physics, Classical Mechanics, Atomic & Molecular Physics Materials Science, Quantum Mechanics, and Electronics etc. The Choice Based Credit System (CBCS) is implemented for this course. Out of 4 theory papers, in each semester, 3 papers are of core. However, students have to opt one paper from DSE papers. Also one Add on Skill enhance course is included as SEC. In the practical course of 400 marks there are compulsory experiments for practical course IV, V, VI and VII (Project/ Internship). Moreover, project work is also mandatory in curriculum at last semester to ensure better practical knowledge and hence better job opportunities in Research & industrial sector. The details are mentioned in the syllabus.

2. Objectives of the course:

The aim of the course is to generate trained manpower with adequate theoretical and practical knowledge of physics domain. Due care is taken to inculcate conceptual understanding in basic phenomena, materials, appropriate practical skills suitable for research and industrial needs. Objectives are

- To design the syllabus with specific focus on key Learning Areas.
- To equip student with necessary fundamental concepts and knowledge base.
- To develop specific practical skills.
- To impart training on circuit design, analysis, building and testing.
- To prepare students for demonstrating the acquired knowledge.
- To encourage student to develop skills for accepting challenges of upcoming technological advancements.

3. Nature of theory question paper

The nature of theory question paper is as per university common mode

1.Total Marks 80.

Q. 1 Multiple choice questions (One mark each)	16
Q. 2 Short answer question (Any eight)	16
Q. 3 A Short answer question (Any four)	12
B Short answer question (one compulsory)	04
Q. 4 Short answer question (Any four)	16
Q. 5 Long answer question. (Any two)	16

OR

Q. 5 Answer the following.	16
A.	
B.	

5. Distribution of Practical Marks (400):

TRAINING OBJECTIVES

1. **Institutional training Objectives.** This includes basic military training of the cadets as part of the curriculum with its long- standing effort to mould young volunteers into disciplined and responsible citizens of India. NCC course is aimed to achieve following learning objectives : -

a) Develop character, camaraderie, discipline, secular outlook, the spirit of adventure, sportsman spirit and ideals of selfless service amongst cadets by working in teams, honing qualities such as self-discipline, self-confidence, self-reliance and dignity of labour in the cadets.

b) To create interest in cadets by including and laying emphasis on those aspects of Institutional Training which attract young cadets into the NCC and provides them an element of thrill and excitement.

c) To inculcate defence Services work ethos that is characterized by hard work, sincerity of purpose, honesty, ideal of selfless service, dignity of labour, secular outlook, comradeship, spirit of adventure and sportsmanship.

d) To create a pool of organized, trained and motivated youth with leadership qualities in all walks of life, who will serve the Nation regardless of which career they choose.

e) To provide conducive environment to motivate young Indians to choose the Armed Forces as a career.

2. **Camp Training Objectives.** Focus is more on outdoor training and develop esprit di corps among the cadets. This includes :-

a) Develop character, camaraderie, discipline, secular outlook, the spirit of adventure, sportsman spirit and ideals of selfless service amongst cadets by working in teams, honing qualities such as self-discipline, self-confidence, self-reliance and dignity of labour in the cadets.

b) To inculcate defence Services work ethos that is characterized by hard work, sincerity of purpose, honesty, ideal of selfless service, dignity of labour, secular outlook, comradeship, spirit of adventure and sportsmanship.

c) To create a pool of organized, trained and motivated youth with leadership qualities in all walks of life, who will serve the Nation regardless of which career they choose.

d) To provide cadets an opportunity to improve upon their mental and physical endurance and stamina by sustained, consistent and high pace of activity throughout the period they undergo in the camp.

e) To provide conducive environment to motivate young Indians to choose the Armed Forces as a career.

f) **Learning Outcomes.** NCC Camp Training is aimed to achieve following : -

i) After acquiring the basic awareness through theoretical training at their respective academic institutions, cadets are exposed to the much-awaited excitement of camp life, where they can apply their knowledge.

ii) Training schedule planned for the cadets ensure maximum benefits of regimented way of life of the Armed Forces, reaches maximum number of cadets.

iii) Main emphasis is on practical aspects of training like cleaning and maintaining their line area, organizing security in and around the camp, making part of the purchase committee, planning for messing, distribution of food, etc.

iv) They also develop limited ability to address real life problems by applying problem solving and critical thinking skills in addition to undertaking tasks as members or leaders of small teams and groups.